राज्य परिशिष्ट 17

[सेवा]
बाइबल में पाई जाने वाली सेवा

खोजें और चर्चा करें। बाइबल सेवा के बारे में क्या सिखाती है?

1. मसीहियों को सेवा क्यों करनी चाहिए?

पढ़ें मत्ती 20:25-28; फिलिप्पियों 2: 5-7; 1 कुरिन्थियों 9: 19-23; 1 पतरस 4: 10-11; यूहन्ना 12:26

ध्यान दें। सेवा करना परमेश्वर के राज्य में महानता का सही पैमाना है (मत्ती 20:25-28)। मसीह के सामान सेवा करना; यीशु मसीह के आदर्शों का अनुसरण करना है (फिलिप्पियों 2:5-7)। यीशु मसीह के लिए लोगों को जितने का सेवा एकमात्र तरीका है (1 कुरिन्थियों 9:19-23)। सेवा करना परमेश्वर की महिमा करना है (1 पतरस 4:10-11)। अंततः, सेवा करने से पुरूस्कार मिलेगा (यूहन्ना 12:26)।

2. मसीहियों को किसकी सेवा करनी चाहिये?

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 4:1-2; इब्रानियों 6:10; लूका 16:13; गलातियों 1:10; 2 कुरिन्थियों 4:5; इफिसियों 6:5-8; रोमियों 14:13-18

ध्यान दें। मसीहियों को यीशु मसीह की सेवा करनी चाहिए (1 कुरिन्थियों 4: 1-2) । मसीहियों को दूसरे लोगों की सेवा करनी चाहिए (इब्रानियों 6:10)। वे मसीह की आज्ञाओं के अनुसार लोगों की सेवा करके यीशु मसीह की सेवा करते हैं। लूका 16:13 सिखाता है कि एक ही समय में दो अलग-अलग स्वामी की सेवा करना असंभव है। मसीही लोग अपनी इच्छानुसार नहीं, बल्कि लोगों की ज़रूरत के अनुसार सेवा करते हैं (गलातियों 1:10)। मसीही लोगों की सेवा अपने लिए नहीं, बल्कि यीशु और उसकी महिमा के लिए करते हैं (2 कुरिन्थियों 4: 5)। मसीही उनको दिए गए अधिकार के तहत लोगों की सेवा करते है (इफिसियों 6:5-8)। मसीही जन व्यवस्था की पत्री के अनुसार नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन और शक्ति के माध्यम से सेवा करते हैं (रोमियों 14: 13-18)।

3. मसीहियों को किन क्षेत्रों में सेवा करनी चाहिए?

पढ़ें मत्ती 24:45-51; 2 कुरिन्थियों 8:1-4; 5:18-21; प्रेरितों के काम 6:1-4; लूका 1:74-75; मत्ती 25:14-30; 1 पतरस 4:10-11

ध्यान दें। मसीही सही समय पर अपने घर के लोगों को भोजन देकर सेवा करते हैं (मत्ती 24:45-51)। मसीही हर जगह ज़रूरतमंद मसीहियों को उदारतापूर्वक भौतिक वस्तुएँ देकर सेवा करते हैं (2 कुरिन्थियों 8:1-4)। मसीही हर जगह गैर-मसीहियों को सुसमाचार का प्रचार करके सेवा करते हैं (2 कुरिन्थियों 5:18-21)। मसीही जन परमेश्वर के वचनों को मसीहियों को पढ़ाकर और वचनों के द्वारा उनका निर्माण करते हैं (प्रेरितों के काम 6:1-4)। मसीही अपने पूरे जीवनकाल में बिना किसी

डर और पवित्रता और धार्मिकता से उसकी आराधना करके आत्मिक रूप से प्रभु की सेवा करते हैं (लूका 1:74-75)। मसीही अपनी उन प्रतिभाओं, अर्थात् क्षमताओं और अवसरों का प्रयोग करते हैं, जिसे मसीह ने उन्हें सौंपा है और इस प्रकार की अन्य प्रतिभाओं को प्राप्त करते हैं (मत्ती 25:14-30)। मसीही लोग कलीसिया को निर्माण करने के लिए जो भी आत्मिक वरदान प्राप्त करते हैं उसका उपयोग करके वे सेवा करते हैं (1 पतरस 4:10-11)।

4. मसीही कैसे सेवक बनते हैं?

पढ़ें यूहन्ना 12:26; रोमियों 12:1; मरकुस 13:34; लूका 16:10-13; 1 तीमुथियुस 3:10; 2 कुरिन्थियों 11:23-28; इब्रानियों 6:10; 10:32-34; 2 कुरिन्थियों 6:3-10; प्रेरितों के काम 20:19

ध्यान दें। यीशु मसीह का चेले के रूप में अनुसरण करके एक व्यक्ति सेवक बन जाता है (लूका 9:23; यूहन्ना 12:26)। एक व्यक्ति स्वयं को प्रभु के लिए उपलब्ध कराकर सेवक बन जाता है (रोमियों 12:1)। यीशु मसीह ने उसे कौन सा काम सौंपा है, यह निर्धारित करके एक व्यक्ति सेवक बन जाता है (मरकुस 13:34)। एक व्यक्ति तब सेवक बन जाता है जब वह अपने सौंपे गए कार्य को ईमानदारी से पूरा करता है (लूका 16:10-13)। अगुवाई की उत्तरदायी के क्षेत्र में (एक कार्य, कार्यालय, स्थान) एक व्यक्ति केवल तभी सेवक बन सकता है जब उसके स्वयं के जीवन और छोटे कार्य करने में उसका परीक्षण किया गया हो (1 तीमुथियुस 3:10)। एक व्यक्ति तब एक सेवक होता है जब वह मसीह के लिए कड़ा परिश्रम करता है, मसीह के लिए पीड़ित होने के लिए तैयार है, और कलीसिया की देखभाल के दैनिक दबाव का सामना करता है (2 कुरिन्थियों 11:23-28)। एक व्यक्ति तब एक सेवक होता है जब वह अन्य पीड़ित मसीहियों की मदद करता है और उनके पक्ष में खड़ा होता है (इब्रानियों 6:10; 10:32-34)। एक व्यक्ति तब एक सेवक होता है जब वह सभी प्रकार के कष्टों में दृढ़ बना रहता है (2 कुरिन्थियों 6:3-10)। एक व्यक्ति तब एक सेवक है जब वह सफलता में दीन बना रहता है (प्रेरितों के काम 20:19)।